Research Unit
Press Information Bureau
Government of India

अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस 2024

बाघों संरक्षण के लए वैश्विक प्रतिबद्धता

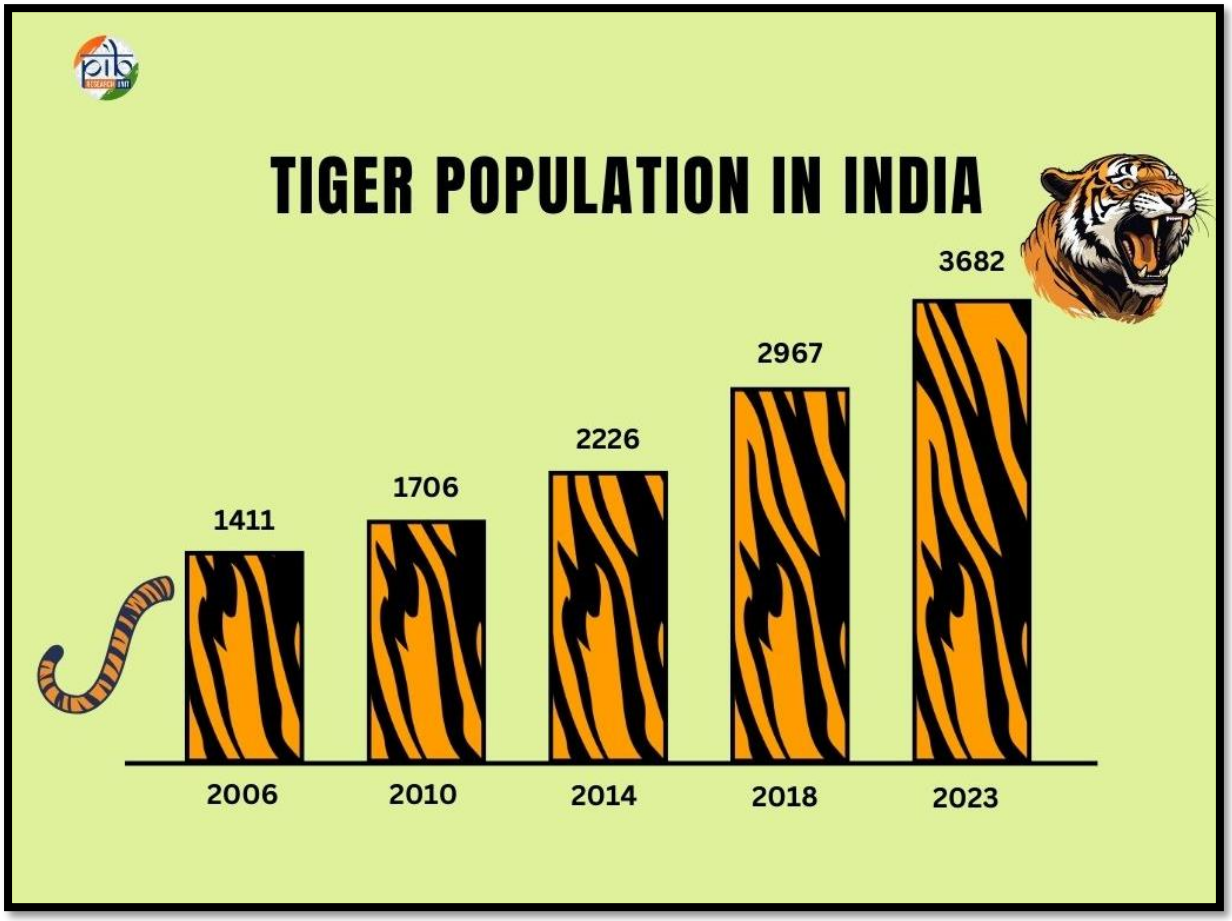
26 जुलाई, 2024

बाघों संरक्षण के महत्व पर बल देने के लए दुनिया भर में हर साल 29 **जुलाई** को अंतर्राष्ट्रीय बाघ दिवस मनाया जाता है। इस दिवस को मनाने की घोषणा 29 जुलाई, 2010 को सेंट पीटर्सबर्ग में की गई थी, जिसका उद्देश्य दुनिया भर में बाघों के संरक्षण और प्रबंधन को संव र्धत करने के समन्वित प्रयासों के तहत टाइगर रेंज वाले सभी देशों को एक साथ लाना था। यह दिन इन शानदार जीवों के सामने आने वाली चुनौतियों और उनके भ वष्य की सुरक्षा के लए कए जा रहे प्रयासों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के एक मंच के रूप में कार्य करता है।



भारत में बाघ

अ खल भारतीय बाघ अनुमान, 2022 (आमतौर पर चार साल के चक्रों में कया जाता है) के 5वें चक्र की सारांश रिपोर्ट के अनुसार, भारत में न्यूनतम 3,167 बाघ हैं और अब यह दुनिया के 70 प्रतिशत से अ धक जंगली बाघों का निवास है। कैमरा-ट्रैप्ड और नॉन-कैमरा-ट्रैप्ड बाघ उपस्थिति क्षेत्रों के लए नवीनतम गणना मॉडल का उपयोग करके अतिरिक्त डेटा वश्लेषण से बाघों की आबादी की ऊपरी सीमा 3,925 और औसत संख्या 3,682 बाघ होने का अनुमान है, जो 6.1 प्रतिशत की सराहनीय वा षक वृद् ध दर को दर्शाती है। बाघों के संरक्षण की दिशा में यह उल्लेखनीय उपलब्धि राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्रा धकरण, भारत सरकार द्वारा राज्य सरकारों के सहयोग से की गई अग्रणी पहल की बदौलत हा सल की गई है।



भारत में बाघ संरक्षण की ऐतिहा सक यात्रा

20वीं सदी के मध्य तक, भारत में शकार, पर्यावास की कमी और अन्य मानवीय गति व धयों के कारण बाघों की आबादी तेज़ी से गरावट आ रही थी। 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात यह गरावट और भी ज़्यादा बढ़ गई और बाघों की आबादी चंताजनक रूप से कम हो गई।

❖ संरक्षण की दिशा में शुरुआती कदम

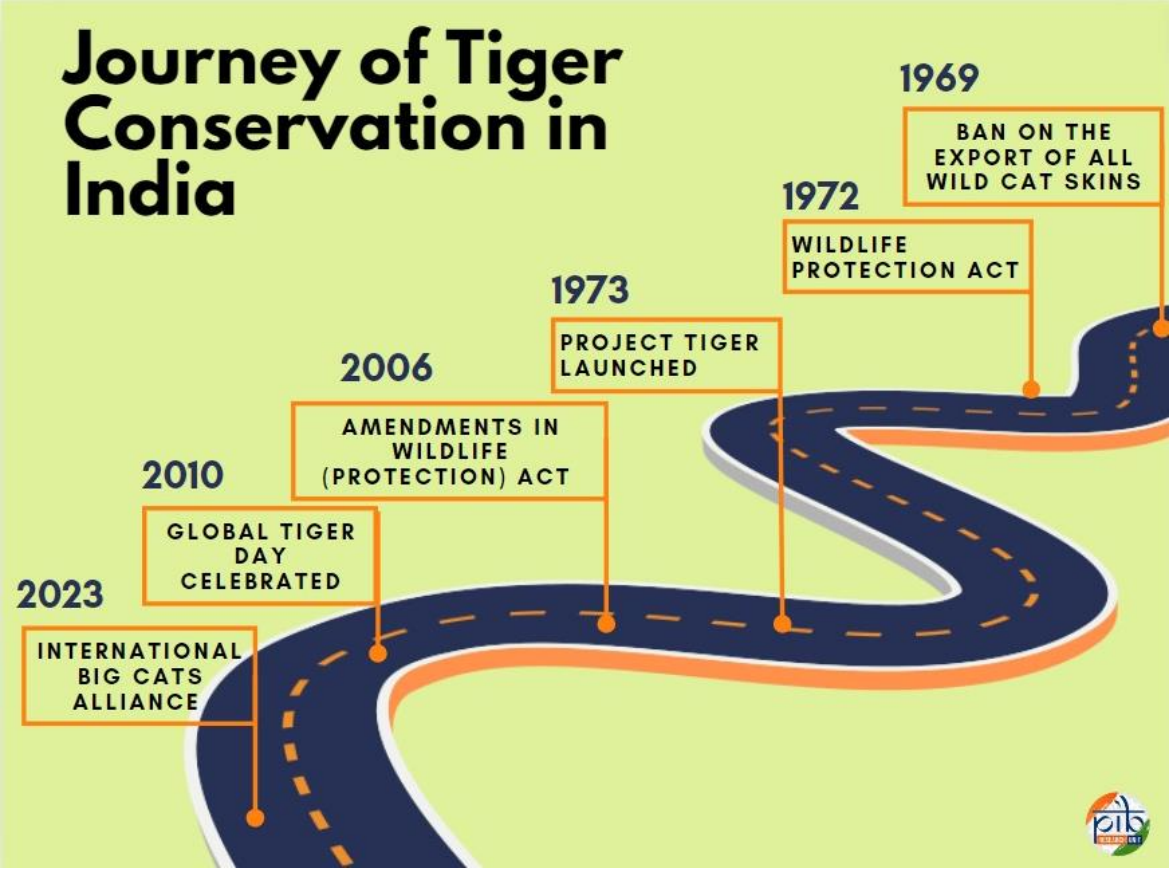
इस निराशाजनक प्रवृ त्त से चंतित होकर **भारतीय वन्यजीव बोर्ड (आईबीडब्ल्यूएल)** ने जुलाई 1969 में नई दिल्ली में एक बैठक बुलाई। बोर्ड ने **बाघों सहित सभी जंगली बिल्लियों की खालों के निर्यात पर पूर्ण प्रतिबंध** लगाने की सफारिश की। इस महत्वपूर्ण कदम का समर्थन **अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन)** ने कया, जिसकी बैठक उसी वर्ष दिल्ली में हुई थी। आईयूसीएन की 10वीं सभा ने बाघ को अपनी **"रेड डेटा बुक"** में एक लुप्तप्राय प्रजाति के रूप में शा मल कया और बाघों को मारने पर वैश्विक प्रतिबंध लगाने का आह्वान कया।

❖ **टाइगर टास्क फोर्स और प्रोजेक्ट टाइगर का गठन**

बाघों के संबंध में बढ़ती चंताओं को देखते हुए **आईबीडब्ल्यूएल की कार्यकारी स मति** ने इस मामले की जांच करने और एक व्यापक संरक्षण रणनीति तैयार करने के लए 11 **सदस्यीय टास्क फोर्स** का गठन कया। यह पहल प्रोजेक्ट टाइगर की शुरुआत को लेकर उल्लेखनीय है। इस टास्क फोर्स ने **अगस्त** 1972 में अपनी अंतिम रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें भारत के आठ बाघ वनों को इस परियोजना में शा मल करने की सफारिश की गई। 1 **अप्रैल**, 1973 **को कॉर्बेट टाइगर रिजर्व में आ धकारिक तौर पर प्रोजेक्ट टाइगर लॉन्च कया गया**। शुरुआती चरण में नौ बाघ रिजर्व शा मल थे:

- कॉर्बेट (उत्तर प्रदेश)
- पलामू (बिहार)
- स म लपाल (उड़ीसा)
- सुंदरवन (पश्चिम बंगाल)
- मानस (असम)
- रणथंभौर (राजस्थान)
- कान्हा (मध्य प्रदेश)
- मेलघाट (महाराष्ट्र)
- बांदीपुर (मैसूर)

ये रिजर्व देश भर में बाघों के व वध पर्यावासों का प्रतिनि धत्व करते हैं।



❖ **कानूनी और संरचनात्मक सुदृढ़ीकरण**

भारत में वन्यजीव संरक्षण का आधुनिक युग 1972 **में वन्यजीव (संरक्षण) अ धनियम** के अ धनियमन के साथ शुरू हुआ। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के जे. सी. डैनियल और प्र सद्ध पक्षी वज्ञानी सलीम अली जैसे प्रभावशाली लोगों ने इस वधायी परिवर्तन को प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भू मका निभाई। भारत सरकार ने वश्व वन्यजीव कोष के साथ मलकर नौ संर क्षत क्षेत्रों को कवर करने वाली एक केंद्र प्रायोजित योजना के रूप में 1973 **में प्रोजेक्ट टाइगर** की शुरुआत की। उल्लेखनीय है क प्रोजेक्ट टाइगर ने 2023 में 50 साल पूरे कर लए हैं, इस अवसर पर एक स्मारक कार्यक्रम आयोजित कया गया था जिसमें प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने *'बाघ संरक्षण के लए अमृत काल की परिकल्पना'* को लॉन्च कया था।

❖ **टाइगर टास्क फोर्स रिपोर्ट और राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्रा धकरण** (2006)

टाइगर टास्क फोर्स ने 2005 में भारत सरकार को एक रिपोर्ट सौंपी, जिसके परिणामस्वरूप 2006 **में वन्यजीव (संरक्षण) अ धनियम** में महत्वपूर्ण संशोधन कए गए। इन संशोधनों के परिणामस्वरूप वैधानिक निकायों के रूप में **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्रा धकरण (एनटीसीए)** और वन्यजीव अपराध नियंत्रण ब्यूरो की स्थापना हुई। इस परिवर्तन ने प्रोजेक्ट टाइगर को महज वत्त

पोषण योजना से **केंद्र सरकार (एनटीसीए)**, **राज्य सरकारों (मुख्य वन्यजीव वार्डन) और बाघ अभयारण्यों (फील्ड डायरेक्टर्स)** को शा मल करते हुए पारस्परिक प्रतिबद्धता में बदल दिया।

- **वैश्विक प्रयास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग**

  बाघों के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने और अंतर्राष्ट्रीय प्रयासों को बढ़ावा देने के लए वर्ष 2010 में **अंतर्राष्ट्रीय बाघ रिजर्व दिवस** मनाया गया। जंगली बाघों की आबादी की गंभीर स्थिति को देखते हुए दुनिया भर के नेताओं और संरक्षण वशेषज्ञों ने रूस के सेंट पीटर्सबर्ग में बाघों की बहाली के लए रणनीति तैयार करने के लए बैठक की। यह ऐतिहा सक घटना **इतिहास में पहली बार हुई जब राष्ट्रीय नेता कसी प्रजाति के संरक्षण के लए वशेष रूप से एकत्रित हुए।** इस बैठक के परिणामस्वरूप **ग्लोबल टाइगर रिकवरी प्रोग्राम** की शुरुआत हुई, जिसमें बाघों की आबादी को वर्ष 2010 में लगभग 3,643 से बढ़ाकर वर्ष 2022 तक लगभग 5,870 करने और बाघों के पर्यावासों की रक्षा करने के लए टाइगर रेंज देशों द्वारा व्यक्तिगत या सामूहिक रूप से की जाने वाली कार्रवाइयों की रूपरेखा तैयार की गई।

भारत में बाघ संरक्षण की यात्रा शकार और व्यापार पर शुरुआती प्रतिबंधों से लेकर कानूनी ढांचे, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और सामुदायिक भागीदारी से जुड़ी परिष्कृत, बहुआयामी संरक्षण रणनीतियों तक वक सत हुई है। इन निरंतर प्रयासों ने केवल भारत में नहीं, बल्कि दुनिया भर में बाघों और अन्य बड़ी बिल्लियों के लए आशाजनक भ वष्य में योगदान दिया है।

भारत में बाघ संरक्षण के लए हाल ही में उठाए गए कदम



❖ **टाइगर रेंज देशों के साथ द् वपक्षीय सहयोग**

भारत सीमा पार संरक्षण प्रयासों को बढ़ाने के लए पड़ोसी देशों के साथ स क्रय रूप से सहयोग कर रहा है। उल्लेखनीय है क भारत और बांग्लादेश दोनों में फैले सुंदरबन क्षेत्र में बाघ संरक्षण को बढ़ावा देने के लए 14 फरवरी, 2023 को पश्चिम बंगाल के कोलकाता में द् वपक्षीय बैठक आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त, भारत और कंबो डया ने "बाघ और उसके पर्यावास की जैव व वधता संरक्षण और सतत वन्यजीव प्रबंधन पुनर्प्राप्ति रणनीति में सहयोग" पर केंद्रित एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर कए। इस द् वपक्षीय पहल के अंतर्गत एक भारतीय प्रतिनि धमंडल ने टाइगर रीप्रोडक्शन प्रोग्राम के लए क्षेत्र की स्थितियों और क्षमता निर्माण आवश्यकताओं का आकलन करने के लए कंबो डया का दौरा कया।

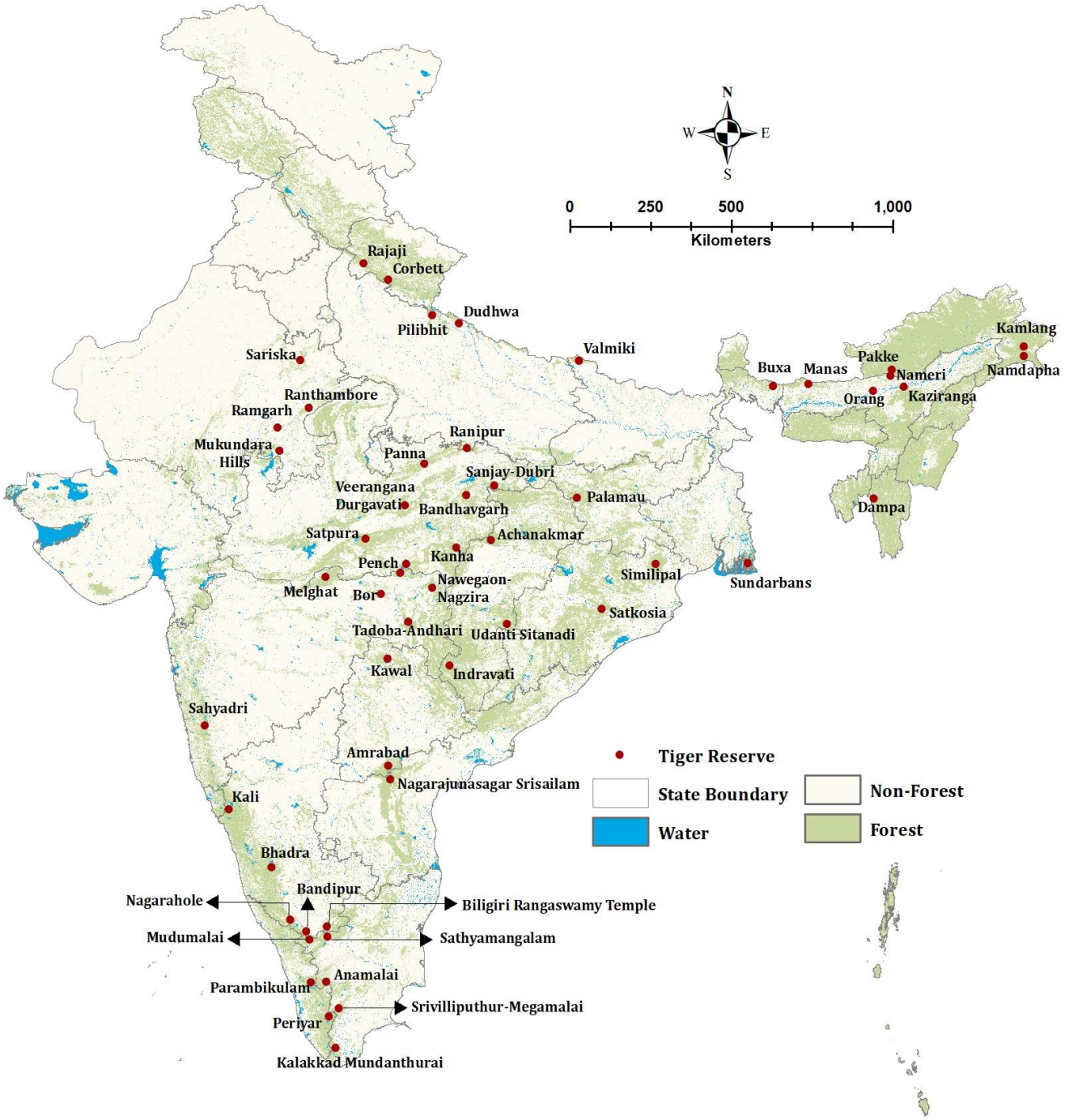
❖ **बाघ अभयारण्यों को अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार**

कई भारतीय बाघ अभयारण्यों ने वर्ष 2022-23 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा प्राप्त की। मध्य प्रदेश के **पेंच टाइगर रिजर्व** और मध्य प्रदेश के **सतपुड़ा टाइगर रिजर्व** को संयुक्त रूप से प्रतिष्ठित **टी**x2 **पुरस्कार** से सम्मानित कया गया। यह पुरस्कार वैश्विक पर्यावरण सु वधा (जीईएफ), संयुक्त

राष्ट्र वकास कार्यक्रम (यूएनडीपी), अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति संरक्षण संघ (आईयूसीएन), वश्व वन्यजीव कोष (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) और ग्लोबल टाइगर फोरम (जीटीएफ) सहित अंतरराष्ट्रीय संगठनों के एक संघ द्वारा प्रदान कया जाता है।

❖ **नए बाघ अभयारण्यों की घोषणा**

मध्य प्रदेश में नए ''**वीरांगना दुर्गावती**'' बाघ अभयारण्य की घोषणा के साथ ही भारत में बाघ अभयारण्यों की कुल संख्या बढ़कर 54 हो गई है। ये अभयारण्य सामूहिक रूप से 78,000 वर्ग कलोमीटर से अ धक क्षेत्र में फैले हैं, जो भारत के भौगो लक क्षेत्रफल का 2.30 प्रतिशत से अ धक है। यह वस्तार बाघों के लए व्यापक और व वध पर्यावास प्रदान करने की भारत की प्रतिबद्धता को रेखां कत करता है।


N
W
E
S
0
250
500
1,000
Kilometers
Rajaji
Corbett
Dudhwa
Pilibhit
Valmiki
Sariska
Ranthambore
Ramgarh
Mukundara Hills
Ranipur
Panna
Sanjay-Dubri
Veerangana Durgavati
Bandhavgarh
Palamau
Satpura
Achanakmar
Kanha
Pench
Nawegaon-Nagzira
Melghat
Bor
Tadoba-Andhari
Udanti Sitanadi
Satkosia
Kawal
Indravati
Similipal
Sundarbans
Kamlang
Namdapha
Pakke
Nameri
Buxa
Manas
Orang
Kaziranga
Dampa
Sahyadri
Amrabad
Nagarajunasagar Srisailam
Kali
Bhadra
Bandipur
Nagarahole
Biligiri Rangaswamy Temple
Mudumalai
Sathyamangalam
Anamalai
Parambikulam
Srivilliputhur-Megamalai
Periyar
Kalakkad Mundanthurai
Tiger Reserve
State Boundary
Water
Non-Forest
Forest

❖ **कंजर्वेशन एश्योर्ड 'टाइगर स्टैंडर्ड्स (सीए|टीएस) मान्यता**

कंजर्वेशन एश्योर्ड 'टाइगर स्टैंडर्ड्स (सीए|टीएस) एक अंतरराष्ट्रीय मान्यता प्रणाली है, जो बाघ अभयारण्यों की प्रबंधन प्रथाओं का मूल्यांकन करती है ता क उनके द्वारा कठोर संरक्षण मानकों को पूरा कया जाना सुनिश्चित कया जा सके। चालू वर्ष में, **भारत में छह अतिरिक्त बाघ अभयारण्यों : काली, मेलघाट, नवेगांव-नागजीरा, पीलीभीत और पेरियार को सीए|टीएस मान्यता प्राप्त हुई है।** इसके साथ ही भारत में कुल 23 बाघ अभयारण्य सीए|टीएस मान्यता प्राप्त कर चुके हैं, जो बाघों के संरक्षण में उच्च मानकों को बनाए रखने के प्रति देश के समर्पण को दर्शाता है।

❖ **इंटरनेशनल बिग कैट्स एलायंस (आईबीसीए) का शुभारंभ**

साल 2023 में प्रोजेक्ट टाइगर के 50 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित स्मारक कार्यक्रम के दौरान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने **सात बड़ी बिल्लियों: बाघ, शेर, तेंदुआ, हिम तेंदुआ, चीता, जगुआर और प्यूमा** के संरक्षण के लए इंटरनेशनल बिग कैट्स एलायंस (आईबीसीए)का शुभारंभ कया। इस गठबंधन का उद्देश्य इन बड़ी बिल्लियों के प्राकृतिक पर्यावासों को कवर करने वाले रेंज देशों तक पहुंच कायम करना है। आईबीसीए इन जंगली निवा सयों के संरक्षण के लए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और प्रयासों को मजबूत करने का इच्छुक है।

बाघ संरक्षण की दिशा में भारत की ओर से हाल में उठाए गए कदमों में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, अनुकरणीय प्रबंधन प्रथाओं को पुरस्कार, संर क्षत क्षेत्रों का वस्तार और वैश्विक मानकों का पालन करने से जुड़े बहुआयामी दृष्टिकोण को रेखां कत कया गया है। ये प्रयास भारत में बाघों की आबादी का दीर्घका लक अस्तित्व और वृद् ध सुनिश्चित करने के लए महत्वपूर्ण हैं और दुनिया भर में संरक्षण रणनीतियों के लए एक मॉडल के रूप में काम करते हैं।

संदर्भ

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1991620

https://pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1943922

https://static.pib.gov.in/WriteReadData/specificdocs/documents/2023/jul/doc2023729230301.pdf

https://pib.gov.in/PressReleaseIframePage.aspx?PRID=2010122

Ministry of Environment, Forest and Climate Change Annual report: https://moef.gov.in/annual-reports

Project Tiger 50 Years of Tiger Conservation in India ebook: https://ntca.gov.in/reports/reports2

Tiger status report 2022: https://ntca.gov.in/

Status of Tigers, co-predators and prey in India-2022-Final Report: https://ntca.gov.in/documents/reports2

Santosh Kumar/Sarla Meena/Sheetal Angral/ Ritu Kataria /Madiha Iqbal